पर्यावरण प्रदूषण : संरक्षण के अहम सवाल

डॉ0 वीरेन्द सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ.

विगत वर्षों में बढ़ती आबादी के दबाब और नई सभ्यता की रोशनी में मनुष्य ने अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए धरती के सभी श्रोतों को तेजी से निचोड़ने के लिए नए तरीके ईजाद किए और प्रकृति संरक्षण के सारे कार्यों और नैतिक मूल्यों को ताक पर रख दिया। इसलिए वर्तमान में उत्पन्न असन्तुलन की स्थिति भयावह हो चुकी है। पशुओं के शिकार, धरती की बिना सोचे समझे खुदाई और जंगलों की कटाई से अनेक पेड़–पौधे और वन्य पशुओं की प्रजातियों का अस्तित्व इस धरती की सतह से मिटता जा रहा है। और कई पर इस प्रकार मिट जाने का खतरा भी मंडरा रहा है।

संसार की सबसे बड़ी 'प्राकृतिक विविधताओं में सुंदर वन के सबसे बड़े मेंग्रोव वन और हिमालय के ग्लेशियर आते हैं। इन्हें निरन्तर बदलती जलवायु से खतरा है। सुंदर वन में समुद्री सतह ऊपर आ गई है। बंगाल की खाड़ी में दस वर्ष के अध्ययन के पश्चात मालूम हुआ है कि समुद्र स्तर 3.14 किलोमीटर प्रतिवर्ष बढ़ रहा है, जिनमें सकरी जलधाराएँ बहती हैं। इस क्षेत्र में बाघ अधिक रहते हैं। मेंग्रोव आवरण घटने से जहाँ बाघों का आवास था, वहां अब इनकी संख्या आधी रह गई है। मेग्रोव नष्ट होने से इस अनूठे इको सिस्टम वाले क्षेत्र में घड़ियालों, मछलियों एवं अन्य समुद्री जीव–जन्तुओं का अस्तित्व डगमगाने लगा है। इससे जैव विविधता बुरी तरह से प्रभावित हुई है।[1]

दूसरे महायुद्ध के बाद विकास और पुनर्निर्माण के लिए जिस तरह का मार्शल प्लान बनाया गया था आज पर्यावरण की रक्षा के लिए उसी तरह का सार्वभौमिक प्लान बनाना चाहिए। क्योटो संधि के समाप्त होने पर संसार को एक नई पर्यावरण संधि की जरूरत है। विकसित और अमीर देशों की यह जिम्मेदारी बनती है। कि वे जरूरी तौर पर दो काम करें एक तो वे विकासशील देशों से कटौती की मांग करने की बजाय, खुद अपने उत्सर्जनों में भारी कमी लाएं। 25 जनवरी 2008 राष्ट्रीय पर्यावरण नीति के प्रारूप में पर्यावरण मंत्रालय ने कहा है। कि पर्यावरण बिगडने के चार कारण हैं। ये हैं जनसंख्या वृद्धि प्रदूषण फैलाने वाली तकनीकें, भोगवाद एवं गरीबी।

बीसवीं सदी के दूसरे दशक में विज्ञान कर्मियों ने नोट किया था कि पृथ्वी की सतह का मानचित्र हमेशा आज जैसा नहीं था। पिछले चार अरब सालों में पृथ्वी के समुद्र में बड़े–बड़े द्वीप और महाद्वीप तथा पर्वत उभरते रहे हैं। वे उसमें डूबते भी रहे हैं। और एक दूसरे से जुड़ते और टूटते भी रहे हैं। उदाहरण के लिए एक वक्त था जब उत्तरी अमेरिका और यूरेशिया आपस में जुड़े हुए थे। अमेरिका अफ्रीका से जुड़ा हुआ था। इन विशाल भूखंडों के बीच आज जो पांच हजार किलोमीटर चौड़ा अटलांटिक महासागर फैला है। वह आज से कुछ करोड़ साल पहले मौजूद नहीं था। दोनों अमेरिकी महाद्वीप पिछले कई करोड़ सालों से दो सेंटीमीटर प्रति वर्ष की रफ्तार से पश्चिम की ओर सरकते रहे है। और आज भी सरक रहे हैं। अनुमान है कि कुछ ही करोड़ वर्षो में उत्तरी अमेरिका का पश्चिमी तट एशिया के

पूर्वी तट से आ मिलेगा और प्रशांत महासागर सिकुड़ कर गायब हो जाएगा। इधर, जहाँ आज हिमालय की पर्वत मालाएं हैं। और जहाँ अफगानिस्तान, पाकिस्तान, उत्तरी भारत और बांग्ला देश स्थित हैं। वहॉ पर स्थितियॉ और भी खतरनाक हैं।

प्रदूषण की सर्वनाशी मार ने हमारी शस्य श्यामला धरती को घनघोर संकटों से भर दिया है। इससे धरती स्वयम् आत्मघाती संकट की ओर अग्रसर हो रही है यह खतरा उस आत्मघाती संकट की ओर ले जा सकता है जहॉ पर मानव केवल अकेला होगा जहां उपलब्धियॉ तो हो सकती हैं, लेकिन उसे प्यार देने एवं प्यार बाँटने वाले जीव –जन्तु, वनस्पति नहीं होगी क्योंकि चिड़ियो नें अब चहचहाना बंद कर दिया है उनका बंसत थम गया है। अनेक चिड़ियों की प्रजातियाँ खत्म हो गई हैं। जो बची हैं, उनको अपनी सखियों का दुःख सताता है। एक अनुमान के अनुसार अगली सदी में लगभग 1200पक्षी–प्रजातियों के विलुप्त होने की संभावनाएँ हैं।[2]

दक्षिण और पूरब में जो त्रासदी हुई उससे सबक लेकर आज मानव को जागना ही होगा। आग लगने पर कुंआ खोदने से कोई फायदा नहीं। प्राकृतिक आपदा कोई बिन बुलाया मेहमान नहीं है। उसे तो आमंत्रण देने वाले हम सभी हैं। हर रोज किसी न किसी तरीके से हम उसे आमंत्रण दे रहे हैं।

वन्य प्राणी जंतु व प्राणी का सहअस्तित्व और संरक्षण ही प्रकृति है इसकी परस्पर भूमिका व योगदान से सृष्टि की निरंतरता है। सृष्टि में मानव का विशिष्ट स्थान है।सामूहिक जीवन शैली से समाज का निर्माण होता है। समाज की सीमाओं व स्थापित मानदण्डों के अतिशय, अतिक्रमण और प्रगति के नाम पर वर्चस्व की होड़ मे जब इंसान पेड़– पौधों व वन्य जीवों के अस्तित्व ही मिटाने लगे, तब इसका परिणाम क्षणिक न होकर दीर्धकालिक होता है। आज भारत ही नहीं विश्व में वन्य जीवों और पेड़ –पौधों के संरक्षण की गम्भीर समस्या जटिल होती जा रही है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के असीमित दोहन के प्रति लापरवाही से मानव जीवन के भविष्य में गम्भीर चुनौती परिलक्षित सी हो रही हैं।

इन्सान की नित–निरंतर बढ़ती आबादी इन प्रजातियों एवं जैव विविधता के लिये खतरा बन गई है। पिछली एक शताब्दी में हमारी जनसंख्या 60 करोड़ से बढ़कर छह अरब हो गई , जिससे पशु – पक्षियों का व्यापक विनाश हुआ है कभी जहॉ बड़े –बड़े वन थे काफी घने जंगल थे आज वे स्थल हमारी आवासीय भूमि बन गए हैं। लकड़ियों का संग्रह खेतों के विस्तार चरागाहों तथा बस्तियों के निर्माण ने संसार के आधे जंगल निगल लिए। 'फ्यूचरिस्ट; पत्रिका के अनुसार साठ और नब्बे के दशकों के बीच विश्व के उष्ण कटिबंधीय वन आवरण का 20 प्रतिशत भाग कट गया या जल गया। यह क्षेत्रफल 45 लाख वर्ग किलोमीटर है। यही प्रजातियों की क्षति का आधार बन वैठा है।

आँकड़े बोलते है कि वर्तमान समय में जितने पक्षी रह गए हैं यह उनका 12 प्रतिशत मात्र शेष हैं। इनमें अधिकतर के सामने संकट उठ खड़े हुए हैं ये अपना नीड़ बुनने के लिए स्थान नहीं पाते, और आवास की समस्या पैदा हो गई है, मानवीय आपदाएँ आई हैं और अनेक रोग आ धमके हैं। सर्वेक्षण बताते हैं, कि कुछ पक्षियों का विलोप अवश्यंभावी है इसके बाबजूद जागरूकता बढाकर अनेक पक्षी प्रजातियों को बचाया जा सकता है।[3]

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि पिछली शताब्दी में तापमान में दो गुनी वृद्धि हुई है और आशंका है कि तापमान में और वृद्धि होगी, समुद्र के जलस्तर में बढ़ोत्तरी होगी। बाढ़, तूफान और मौसम में अचानक परिवर्तन भी हो सकते हैं। इन

सबका दुष्प्रभाव जैव विविधता पर पड़ेगा। अलनीनो घटनाएँ, पेंग्विन जैसी विरल एवं दुर्लभ प्रजातियों पर कहर ढा सकती हैं। इसके अतिरिक्त अलनीनो के साथ–साथ सूनामी और दावानल के प्रहार भी इस आसन्न संकट को बढ़ा सकते हैं।

पर्यावरण के संकट ने अनेक पौधों और पेड़ों के लाल और हरे रंग को गायब कर दिया है। उनकी अरब केवल टहनियां रह गई है, इससे बाघों को छिपने की जगह नहीं रही है। इस प्रकार शिकारी बड़ी सहजता से इनका शिकार कर लेते हैं। शताब्दी पूर्व भारत में 40,000 बाघ थे, पंरतु यह संख्या सिमटकर 37000 से 12000 तक रह गई है। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार सन् 2050 तक विश्व की एक–चौथाई वनस्पति और जीव–जन्तुओं के विनाश की संभावना है। जलवायु–परिवर्तन तेजी से पौधों और जैव विविधता के लिए गंभीर संकट का पर्याय बनता जा रहा है। इससे समस्त विश्व प्रभावित है। वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की है कि पृथ्वी पर 25 हॉटस्पॉट में 56,000 पौधों, प्रजातियों और 3700 मछली, सर्प, पक्षी व अन्य जीवों की प्रजातियों की अपार क्षति हो सकती है। यह स्थिति ज्यादा दूर नहीं है। अगले 50 वर्षों में इस विनाश–लीला को देखा जा सकता है, यदि हम मौसम परिवर्तन को न रोक सके तो विनाशकारी खतरे आ सकते हैं इसके लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा, खतरनाक गैसों Co_2, Co, So_2 आदि का उत्सर्जन बंद करना होगा।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट तो और भी चौंकाने वाली है, जिसमें कहा गया है कि पिछले पाँच सौ सालों में 844 जीवों और वनस्पतियों का विलोप हो गया है। यह क्षति पहले की अपेक्षा एक हजार गुना अधिक है, अर्थात इन दिनों जीवन की समाप्ति अपनी चरम सीमा पर है। प्राकृतिक संतुलन पर जीव – जन्तुओं और वनस्पतियों का ही नहीं, बल्कि हम सब लोगों का भी जीवन निर्भर है। हमारा अधिकांश भोजन, दवा, कपड़ा एवं दैनिक जीवन की चीजें वनस्पतियों से आती हैं।[4]

पर्यावरण ही प्राकृतिक संसाधनों का श्रोत है जिसका अपघटन एक चितंनीय विषय है। जैसे सभ्यता विकसित एवं सुदढ़ होती गई, प्रकृति एवं पर्यावरण का अपघटन भी उतनी ही तेजी से होने लगा। आज विश्व स्तर पर पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण मौसम में परिवर्तन आ रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप हरित गृह प्रभाव, अम्ल वर्षा, सूखा, बाढ़, ओजोन परत में छिद्र जैसे संकट उत्पन्न हो रहे हैं जिसका जन मानस के स्वास्थ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। बढ़ते नैतिककतावाद से पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। बिगड़ते पर्यावरणीय स्वरूप एवं प्रदूषण की रोकथाम में पौधे अतुलनीय भूमिका निभाते हैं। कई वैज्ञानिक अनुसंधानों के पश्चात यह भी निष्कर्ष निकला है कि कुछ विशेष प्रकार के पौधे खास पर्यावरण की सूचना देने में सक्षम हैं, ऐसे पादप सूचक पौधे या इंडिकेटर प्लान्टस कहलाते हैं चूंकि एक पादप प्रजाति अथवा पादप–समुदाय पर्यावरण स्थितियों के पैमाने के रूप में काम करता है अतः इसे पारिस्थितिकी सूचक अथवा जैव सूचक या फाइटो इंडिकेटर भी कहा जाता है।

आबादियों के बीच भी जंगलों में पशु–पक्षियों की अधिकाधिक तादाद है लेकिन दुःखद पहलू यह है कि मानवीय आवश्यकताओं और आक्रमणों के चलते पशु पक्षियों की संख्या पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। मोरों की संख्या घट रही है। सारस के प्रवासों को भी खतरा है। इटावा, अलीगढ़, एटा और मैनपुरी जैसे क्षेत्रों में पक्षियों की सुरक्षा पर्यावरणविदों के लिए एक विचारणीय विषय हैं। वर्तमान में इन महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्रों से सम्बन्धित कार्यक्रमों के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन की आवश्यकता पर जोर देना लाजमी है। क्योंकि आबादी बहुल क्षेत्रों में प्रकृति के झंझावतों, बाढ़,वनों के कटान, सूखा और

प्रदूषण के अलावा मानवीय क्रूरता के कारण भी पक्षियों की तादाद में कभी हो रही है। संवर्द्धन के सशक्त अभियान व कार्यक्रम के तहत न सिर्फ पशु पक्षियों के अहम् वजूद को कायम रखना होगा बल्कि जैविक श्रृंखला के संतुलनकारी पक्षों को ध्यान में रखते हुए हमें इसे सवंर्द्धन करना होगा।

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है इसका प्रारम्भ सन् 1972 से हुआ था। तबसे लगातार प्रतिवर्ष हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाते आ रहे हैं। और इस साल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके आयोजन के लिए थीम तय की गई है और वह थीम है– ''आपके ग्रह पृथ्वी को आपकी जरूरत है। जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए एक हों।''

मानव और जीव जंतुओ को बचाने तथ ढांचागत सुविधाओं व संपत्ति का नुकसान रोकने के लिए बहुत सावधानी से योजनाएं बनाने और संबंधित एजेंसियों के साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। इससे भी जरूरी है। आपदा बचाव नीतियां और गतिविधियां लागू की जाएं। पहाड़ों को संभावित ग्रहण से बचाने के लिए जोरदार वैश्विक कार्यक्रम की तुरंत आवश्यकता है। पर्वतीय क्षेत्रों में पहले ही वेपनाह गरीबी फैली हुई है। और साथ ही इस नाजुक प्राकृतिक प्रवास पर विनाश का साया मड़रा रहा है। जलवायु परिवर्तन के गंभीर और वास्तविक खतरे की अनदेखी निश्चित तौर पर और अधिक विनाशकारी होगी। इंटरनेशनल फूड पालिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा जलवायु परिवर्तन के प्रमाण पर किए गए शोध के अनुसार वर्ष 2050 तक गेहूं का 50 प्रतिशत, चावल का 17 प्रतिशत और मक्के का सात प्रतिशत उत्पादन जलवायु परिवर्तन के कारण कम हो जाएगा। इससे दक्षिण एशिया के 16 अरब लोगों की खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। इसके कारण पूरी दुनिया में 2.5 करोड़ और बच्चे कुपोषण का शिकार हो सकते हैं। इस शोध रिपोर्ट में दक्षिण एशिया की चर्चा करते हुए कहा गया है कि दक्षिण एशिया देशों में फसलों की उत्पादकता कम होगी तथा ग्लेशियरों के पिघलने बाढ़–सूखे एवं अनियमित वर्षा सहित अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि पर्यावरण के विघटन को रोकने के प्रयत्न में दुनिया के हर इन्सान का जुड़ना आवश्यक है किन्तु ऐसा तभी हो सकता है जब सोचने के पारंपरिक तरीके में एक बार फिर आमूल परिवर्तन आए। वास्तव में आज हम सभ्यता के उस कगार पर आ खड़े हुए हैं जहां हमें अपना, धरती का अस्तित्व बनाए रखने के लिए प्रकृति शोषण पर आधारित अपनी समूची मानसिकता को बदलना होगा।

पर्यावरण वर्तमान पीढ़ी के हाथों चाहे हम किसी स्तर पर हों। इसकी सुरक्षा और संरक्षण को किसी भी एक सरकारी विभाग पर नहीं छोड़ा जा सकता। उसमें तो हर व्यक्ति को अपना दायित्व समझना होगा ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक सुन्दर स्वरूप, स्वच्छ पर्यावरण सौंप सकें।

सबसे अहम सवाल यह है कि आज चुनाव यानी लोकतंत्र के महापर्व में ग्लोबल वार्मिंग और जलसंरक्षण जैसे विशाल मुद्दों को लेकर खादीधारी क्यों नहीं मुद्दा बनाकर चुनाव में उतर रहे हैं। जिस पर्यावरण में हम रह रहे हैं उसमें प्रदूषण को दूर करने का मुद्दा, क्या मुद्दा नहीं है? क्या जल–थल की सुरक्षा मुद्दा नहीं है ?यदि नहीं तो हम इन जाहिल मूर्खो को वोट आखिर क्यों दे रहे हैं? और एक आदर्श नागरिक के कर्तव्यों की इतिश्री क्यों कर रहें हैं?

विश्व का प्रत्येक व्यक्ति शांति चाहता है। शांति प्रकृति से लड़कर नहीं मिलती। भारत के प्रत्येक मंगल मुहूर्त में पढ़ा जाने वाला शांति मंत्र पृथ्वी के संगठन तत्वों के प्रति सचेत श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति है। यजुर्वेद में प्रार्थना है'' पृथ्वी

और अंतरिक्ष शांत हो, जल शांत हो, औषधियां और वनस्पतियां शांत हो। सर्वत्र सब कुछ शांत हो। आज पृथ्वी अशान्त है, जल अशान्त है, वन उपवन अशांत है, पर्यावरण पर आगे बनने वाली विश्व नीति मे भारत और सिर्फ भारत ही योगदान दे सकता है। शांति मार्ग की चाबी भारत के पास है लेकिन तब क्या किया जाए जब भारत की चाबी विश्व व्यापार संगठन के पास हो?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पर्यावरण वर्तमान और भविष्य–डा0 वीरेन्द्र सिंह यादव ,राधा पब्लिकेशन्स दरिया गंज ,नई दिल्ली।
- पर्यावरण एक परिचय–श्री शशि शुक्ला और एन0के तिवारी रामप्रसाद एण्ड सन्स हमीदिया रोड, भोपाल
- पर्यावरण शिक्षा– डा0 एम0के0 गोयल विनोद पुस्तक मन्दिर ,आगरा
- समाज और पर्यावरण– जगदीश चन्द्र पाण्डेय प्रगति प्रकाशन,जयपुर
- पर्यावरण शिक्षा– श्यामसुन्दर पुरोहित अजन्ता बुक्स,बीकानेर
- पर्यावरणीय शिक्षा– डा0 शिवराज सिंह सेंगर साहित्य प्रकाशन आगरा
- पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधान–संजय तिवारी साहित्य पब्लिकेशन्स,आगरा
- सामाजिक पर्यावरण भौतिक एवं जैविक पर्यावरण–प्रो0 एच0एस0 शर्मा राधा प्रकाशन मन्दिर,आगरा

Copyright © 2015, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.